International Journal of Sanskrit Research 2024; 10(3): 69-71

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2024; 10(3): 69-71
© 2024 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 01-02-2024
Accepted: 02-03-2024

डॉ. कल्पना श्रृंगी
सहायक आचार्य, संस्कृत
राजकीय कला महाविद्यालय, कोटा, राजस्थान, भारत

डॉ. महावीर प्रसाद साहू
सहायक आचार्य, संस्कृत
राजकीय कला महाविद्यालय, कोटा, राजस्थान, भारत

Corresponding Author:
डॉ. कल्पना श्रृंगी
सहायक आचार्य, संस्कृत
राजकीय कला महाविद्यालय, कोटा, राजस्थान, भारत

भट्ट मथुरानाथ शास्त्री का कथा साहित्य (मञ्जुनाथगद्यगौरवं के सन्दर्भ में)

डॉ. कल्पना श्रृंगी एवं डॉ. महावीर प्रसाद साहू

DOI: https://doi.org/10.22271/23947519.2024.v10.i3b.2369

सारांश
सृष्टि के आरम्भ से लेकर वर्तमान काल तक जीवन एवं साहित्य के क्षेत्र में परिवर्तन और परिवर्धन अवश्य होते रहे हैं। संस्कृत गद्य साहित्य के क्षेत्र में यह परिवर्तन वैदिक साहित्य से प्रारम्भ होता हुआ बाह्मण, सूत्र व उपनिषद् ग्रन्थों के माध्यम से मध्यकाल के सुबन्धु बाणभट्ट व दण्डी के गद्य साहित्य में दृष्टिगोचर होता है। परिवर्तन की फिर वहीं अजस्रधारा अर्वाचीन संस्कृत साहित्य में भट्ट मथुरानाथ शास्त्री, प. क्षमाराव, विधुशेखर भट्टाचार्य, हरिदाश सिद्धान्त बागीश, प्रो. राधावल्लभ त्रिपाठी, प्रो. अभिराजराजेन्द्र मिश्र प्रभृति गद्यकारों का अवलम्बन पाकर अनेक धाराओं मे विभक्त हुई सी संस्कृत गद्य धरा को अभिसिञ्चित करती हुइ उसे पल्लवित और पुष्पित कर रही हैं। फिर चाहे वह औपन्यासिक गद्य साहित्य हो या कथा साहित्य अथवा निबन्ध साहित्य इन सभी गद्य–विधाओं ने आधुनिक गद्य साहित्य के कथ्य व शिल्प में परिवर्तन व परिवर्धन उपस्थित कर संस्कृ त गद्य को युगानुरूप संचेतना प्रदान की हैं।

कूटशब्दः दयनीया, चतुरवंचकः, प्रेम्णः प्रतिदानम्, ममाध्यापनम्, आदर्शरमणी, जले ज्वाला, अनादृता, भाग्य रेखा, क्षत्रियशोणितम्।

प्रस्तावना
संस्कृत रचना साहित्य में नवीन रीति, प्रवृत्तियों के प्रयोगकर्ता, संस्कृत में प्रथम बार गजल विद्या के आधायक भट्ट मथुरानाथ शास्त्री जी ने ही कथा क्षेत्र में भी नवीन युग का सूत्रपात किया। कविवर भट्ट मथुरा नाथ शास्त्री का जन्म सन् 1889 में हुआ था। शास्त्री जी एक युगप्रवर्तक साहित्यकार कथाकार थे। हिन्दी गद्य सम्राट् प्रेमचन्द के समान ही भट्ट मथुरानाथ शास्त्री की कथाओं का उद्देश्य भी मूलतः नैतिक व सुधार वादी रहा है। इन्होंने शतशः संस्कृत कथाओं का सर्जन किया, जो वर्तमान में प्रकाशित और अप्रकाशित दोनों ही रूपों मे उपलब्ध होती है। इन्हीं की एक अप्रकाशित कथाओं का संग्रह ''मंजुनाथगद्यगौरवम्'' के नाम से प्रख्या के अन्तर्गत प्रो. राधावल्लभ त्रिपाठी के सम्पादन में प्रकाशित हुआ है।
शास्त्री जी के इस गद्य संग्रह को चार खण्डों मे विभक्त किया गया है। प्रथम उपन्यास खण्ड में तीन उपन्यास (आदर्शरमणी, मोगल साम्राज्य सूत्रधारो महाराजो मानसिंह, भक्तिभावनो भगवान्) संकलित है, द्वितीय कथाखण्ड में नौ कथाओं का संकलन है, तीसरे निबन्ध खण्ड मे तीन निबन्ध तथा अन्तिम खण्ड मे एक ध्वनि नाटिका का संकलन किया गया है।
प्रस्तुत शोधालेख गद्य संग्रह की कथाओं पर केन्द्रित है। शास्त्री जी की इन कथाओं में कुछ कथाएँ सामाजिक है तो कुछ प्रणयपरक है, किसी में हास्य का पुट दिखाई देता है तो किसी में मानव मन के ऊहा–पोह को चित्रित किया गया है। इन कथाओं पर समीक्षा परक दृष्टि डालने से पूर्व यहाँ इनका संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत किया जा रहा है। इस कथा संग्रह की प्रथम कथा ''दयनीया''[1] में पारम्परिक रूढि परम्परा पर प्रहार किया है कि किस तरह प्राचीन रूढ़ि परम्पराओं से नारी की स्वतन्त्रता घर की चारदिवारी तक ही सीमित है। इसी समस्या को केन्द्र में रखकर ही शास्त्री जी ने इस कथा का ताना बना बुना है। भूकम्प जैसी त्रासदी घटित हो जाने पर कथानायिका के समस्त पारिवारिक जन घर से बाहर निकल आते है किन्तु जैसे ही वह आत्मरक्षार्थ घर से बाहर निकलना चाहती है तो सास के द्वारा लोक–लाज के भय से पुनः घर मे प्रविष्ट करा दिया जाता है। यथा –

श्वश्रूः पृष्ठतों समागच्छन्तीं विलोक्य नेत्राभ्यां दहन्ती वाऽवदत् इतः पलाय्यः क्व गमिष्यसि ? किं न पश्यसि इतस्ततः सर्वत्र बहिः पुरूषा एव सन्ति ? किंञ्चिल्लज्जापि पालनीया नाम।

द्वितीय कथा चतुरवञ्चकः[2] एक हास्यपरक कथा है जिसमें एक ठग के द्वारा एक धनिक महाशय को ठगने का वृतान्त है। वर्ष पर्यन्त धनिक ने गाँव–गाँव घूमकर श्वश्रूरालयों से जो धन प्राप्त किया, वह समस्त धन किस प्रकार एक वंचक के द्वारा हस्तगत कर लिया जाता है इसका रोचक वृतान्त इस कथा मे निबद्ध है। कथा का रोमांच और अधिक बढ़ जाता है जब धनिक को यह ज्ञात होता है कि वह चतुरवंचक और कोई नहीं बल्कि उसकी बहुपत्नीयों मे से ही किसी एक पत्नी की भगिनी का पुत्र है।

''प्रेम्णः प्रतिदानम्''[3] राजस्थानी लोक कथा पर आधारित प्रेम–परक कथा है। इस कथा में दाम्पत्य जीवन के उत्कृष्ट प्रेम बलिदान को चित्रित किया गया है। विष के प्रभाव से मूर्च्छित दम्पती के जीवन का एक मात्र उपाय दो गिलास दूध है किन्तु स्थिति बड़ी विचित्र है कि तत्समय केवल एक गिलास दूध होने से एक ही व्यक्ति के प्राण बच सकते है। तब प्रेम का प्रतिदान उपस्थित होता है। प्रेमी युगल एक–दूसरे के प्राणों की वांछा में दुध पीने के लिए अनुनय विनय करते है किन्तु अन्त में एक–दुसरे के प्रति प्रेम की पराकाष्ठा देखकर दोनों ही सुख–पूर्वक प्राणोत्सर्ग कर देते है। राजस्थानी लोक कथा मे इस कथा को एक मृगयुगल के माध्यम से चित्रित किया है। एक अक्षत मृग युगल को मृत देखकर एक स्त्री अपनी सखी से प्रश्न करती है कि इनका प्राणान्त कैसे हो गया। उत्तर मे वह कहती है कि –

नीर थोडों है स्नेह घणों लग्यों प्रीत रो बाण।
तु पी तु पी खेण मरा इण विध निकले प्राण।।

''अनादृता''[4] नवीन कथ्य मे लिखी एक सामाजिक कथा है। माता–पिता विहीन एक अनाथ बालिका का जीवन कितना कष्टमय और दुःखपूर्ण है कि उसके ताऊ–ताई के द्वारा उसे क्षणे क्षणे अपमान तिरस्कार और प्रताडित किया जाता है। इस जीवन से भयभीत होकर एक दिन वह घर से भाग जाती है और अन्त में क्षुधापीडित लतिका की मृत्यु हो जाना ही इस कथा का मार्मिक अन्त हैं।

''ममाध्यापनम्''[5] आत्मकथा शैली में लिखी कथा है। जिसका नायक सोमेश्वर नामक अध्यापक है। सोमेश्वर की सच्चरित्रता और अध्यापन कार्य को देखकर एक प्रबुद्ध पिता ने अपनी पुत्री को ट्युशन पढाने के लिए उसे नियुक्त कर दिया। कामी स्वतां पश्यति इस उक्ति के तहत अध्यापक के मन में उस बालिका के प्रति प्रेमांकुर स्फुटित हो जाता है तथा अपने प्रेम को अभिव्यक्ति करने के लिए एक मदन पत्र उस बालिका को प्रत्युत्तर की कामना से समर्पित कर देता है किन्तु बालिका के स्थान पर उसके पिता का प्रत्युत्तर सुनकर अध्यापक आत्मग्लानि से तिरस्कृत होकर तत्क्षण ही उस ग्राम से पलायन कर जाता है। यथा –

''सोमेश्वर महाशय!'' भवन्तं सुचरितं सुजनं च पूर्वमजानाम्। परमध अपगतःस विश्वासः। प्रीतये भवता ह्यः कीदृक्पत्रं समर्पितमासीत्? किमेतद्भद्रोचिंत कर्म ? हा धिक्।[6]

''जले ज्वाला''[7] लोक कथा आधारित प्रेमाख्यायि है। जिसमें ऊजली जेठवा लोक नायक है। किस प्रकार एक दुर्दिन मय गहन अन्धरात्री मे अपनी कुटी के द्वार पर आये हुए शीताघात से मूर्च्छित व्यक्ति के प्राणों की रक्षा एक वृद्ध चारण अपनी अविवाहित पुत्री के शरीर ताप से करवाता है तथा कथान्त मे नायक–नायिका का प्राणान्त ही इसकी कथावस्तु है।

''भाग्य रेखा''[8] एक ऐतिहासिक कथा है जिसमें राजस्थान के प्रसिद्ध वीर मेवाड़ अधिपति महाराणा संग्राम सिंह के जीवन चरित का वर्णन किया गया है। जो भारती इतिहास में राणा सांगा के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

''क्षत्रिय शोणितम्''[9] परतन्त्रकालीन कथानक पर आधारित कथा है जिसमें एक क्षत्रिय की प्रेमकथा निबद्ध है। यह कथा आत्मकथा शैली में लिखी गई है जिसका नायक अपने एक अंग्रेज अधिकारी की पुत्री ऐदिथा से प्रछन्न प्रेम करता है किन्तु वह स्वजातीय व्यक्ति विंडाल से प्रेम करती है। जब वह दुष्ट विंडाल अंग्रेज बाला को छलकर चला जाता है तो अन्तर्गूठ घन व्यथित प्रेमी क्षत्रिय का रक्त खोल उठता है और वह अपने परिणाम की परवाह किये बिना ही उस क्रूर अत्याचारी बिंडाल की जमकर धुनाई कर देता है।

''**शस्त्रपाणिः क्षत्रियाणी**''[10] एक मध्यकालीन इतिवृत पर आधारित कथा है। जिसमें एक दीन क्षत्रिय पुरूष को विवाह के लिए ऋण इस शर्त पर दिया जाता है कि जब तक ऋण नहीं चुकाऐगा तब तक उसकी पत्नी तत्कृते, परदारा के समान रहेगी। जब इस शर्त का पता उसकी पत्नी को चलता है तो वह भी पुरूष वेश में हाथ मे शस्त्र उठाकर अपने पति की प्रतिज्ञा को पूर्ण करने में सहयोग करती हैं।

इस प्रकार भट्ट मथुरानाथ शास्त्री के इस कथा संग्रह की कुछ कथाएँ जैसे दयनीया, अनादृता, ममाध्यापनम् आदि सामाजिक जीवन की समस्याओं को इंगित करती हुई पाठक के ह्रदयपटल पर छाप छोड़ने मे सफल रही है कि इन समस्याओं के प्रतीकार करने पर ही स्वच्छ मानव समाज का निर्माण किया जा सकता है। दयनीया की नारी जब भूकम्प त्रासदी मे अपने को जीवित पाती है पर उसके जीवन के आधार दोनों पुत्रों की मृत्यु से उसकी जीवन आशा धूमिल हो जाती है किन्तु उसके मन में घृणित रूढि परम्पराओं के प्रति प्रतीकार की भावना उसमें नवजीवन का संचार करती है।

चतुरवंचक कथा हास्यपरक होते हुए भी पाठक के समक्ष एक प्रश्न उठाती है कि वर्तमान युग में बहुपत्नी प्रथा और अधिक सन्तानोत्पति, जिन सन्तानों का नाम स्वयं उनके पिता को भी मालूम नहीं क्या युगोचित है ?

अनादृता कथा सामाजिक जीवन की उस विद्रूपता का आइना है, जहाँ रक्त सम्बन्धों मे भी स्वार्थपरता, असहिष्णुता और लोभ मानवीय गुणों के भक्षक बनकर संवेदनहीनता की पराकाष्ठा को जन्म देते है।

ममाध्यापनम् कथा में आज के अध्यापक के कर्तव्यों का बोध कराया गया है कि अध्यापक को किस प्रकार आत्मसंयमित होते हुए अपने कर्तव्य का पालन करते हुए चरित्र की रक्षा चाहिए क्योंकि कर्तव्य में तनिक भी प्रमाद भूयसी प्रतिष्ठता को कलंकित कर देता हैं।

प्रेम्णः प्रतिदानम् कथा में उत्कृष्ट प्रेम अभिव्यंजना होने पर भी यह कथा कहीं न कहीं आदर्शवाद से मण्डित है क्योंकि प्रेम के लिए प्राणोत्सर्ग करने वाले दम्पती का ईश्वरीय अनुकम्पा से जीवित होना कथा को मूल उद्देश्य से विचलित कर देता है। यदि कथा की विश्रान्ति नामक नायिका के उत्कृष्ट प्रणय निरूपण तक ही सीमित रहती तो कथा अधिक स्पृहणीय और यथार्थ से अनुस्युत होती। जो उसे वास्तविकता के धरातल पर अवस्थित कर देती।

'जले ज्वाला'

ऐतिहासिक लोक कथा होने पर भी समाज के उच्च वर्ग के प्रति व्यंग्य करती प्रकट आती है कि किस प्रकार अपना सर्वस्व अर्पण कर के राजा जेठवा के प्राण बचाने वाली उज्ज्वला को न्याय नहीं

मिल पाता है, और वह अपने प्राणों का अन्त कर लेती है इस व्यथा को स्वयं कथाकार ने कथा नायिका के मुख से कहलाया है – यथा अस्मिन् संसारे दीनादुखिताया मे सम्प्रति न कोऽवि सहायक। नाहं भवतो जातिप्रणये बाधिका भवितुमिच्छामि। भवद् हृदये जात्युपजातीनां यो हि निर्बन्धोंऽस्ति स न तावदीश्वरनिर्मितः। अपितु केवलं समाजविकल्पितः सः।[11]

भाग्यरेखा में इतिहास प्रसिद्ध वीरयोद्धा का जीवन चरित उपस्थित किया गया है जिसने युद्ध क्षेत्र में क्षत विक्षत होते हुए भी अन्तिम सांस तक शत्रुओं से डटकर मुकाबला किया। यहाँ उसके निर्मल चरित्र को निबद्ध किया गया है।

क्षत्रियशोणितं कथा में यह बताया गया है कि किस तरह प्रेम में परिस्थितिवशात् अपमानित होता हुआ क्षत्रियरक्त शीतायित हो जाता है किन्तु जब वहीं क्षत्रियरक्त अपने प्रेम को अपमानित होता हुआ देखता है तो खौल उठता है तथा जिस विंडाल के कारण उसकी प्रेमिका की दुर्दशा हुई उसकी भी वह दयनीय स्थिति बना देता है।

शस्त्रपाणिः क्षत्रियाणी में कवि ने एक मध्यकालीन क्षत्रियाणी के माध्यम से यह संदेश पहुचा है कि आज की भारतीय नारी जरूरत पडने पर पुरूषों से कमतर नहीं है।

इस प्रकार भट्ट मथुरा नाथशास्त्री की कथाएँ विविध पुष्पों से गुम्फित उस पुष्पगुच्छ के समान है जो हस्तगत होकर सहृदयों को अपनी सुगन्ध से सुवासित कर देता है।

उद्देश्यः

संस्कृत साहित्य की नवीन प्रवृत्तियों को उजागर करना। भट्ट मथुरानाध शास्त्री का संस्कृत कथा के क्षेत्र में किये गये योगदान को प्रकट करना। संस्कृत गद्य की नवीनता को प्रकट करना। भट्ट मथुरानाथ शास्त्री के कथा साहित्य की समीक्षा करना। संस्कृत कथा साहित्य की वर्तमानकालीक अन्य भाषायी कथा साहित्य से तुलना करना।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. मंजुनाथ गद्य गौरवम् – दयनीया कथा
2. मंजुनाथ गद्य गौरवम् – चतुरवञ्चक कथा
3. मंजुनाथ गद्य गौरवम् – प्रेम्णः प्रतिदानम् कथा
4. मंजुनाथ गद्य गौरवम् – अनादृता कथा
5. मंजुनाथ गद्य गौरवम् – ममापध्यानम् कथा
6. दृक् अंक – 20
7. मंजुनाथ गद्य गौरवम् – ज्ले ज्वाला कथा
8. मंजुनाथ गद्य गौरवम् – भाग्यरेखा कथा
9. मंजुनाथ गद्य गौरवम् – क्षत्रिय शोणितम् कथा
10. मंजुनाथ गद्य गौरवम् – क्षत्रिय शोणितम् कथा
11. सागरिका गद्य साहित्य विशेषांक